Result Mitra Daily Magazine

16वां BRICS शिखर सम्मेलन एवं भारत

हालिया संदर्भ :

- भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 16वें ब्रिक्स (BRICS) शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए मंगलवार (22 अक्टूबर)को रूस के कजान शहर पहुंच गए हैं।
- पिछले वर्ष BRICS के समूह विस्तार के बाद यह पहला शिखर सम्मेलन है।
- भारत के लिए यह शिखर सम्मेलन विशेष महत्वपूर्ण है क्योंकि भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने इस शिखर सम्मेलन में भाग लेने के बाद चीन के राष्ट्रपति "शी जिनपिंग" से मुलाकात कर सकते हैं।
- हालांकि भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के मुलाकात से एक दिन पहले ही दोनों देश एलएसी (LAC, Line of Actual Control) पर से सैनिकों की वापसी करने पर सहमत हो गए हैं।

BRICS क्या है ?

- BRICS (ब्रिक्स) विभिन्न देशों का एक अंतर सरकारी संगठन है।
- BRICS विश्व की उभरती राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का एक संघ है जिसकी परिकल्पना वर्ष 2001 में अर्थशास्त्री "जिम–ओ–नील ने ब्राजील, चीन, भारत और रूस के लिए ब्रिक (BRIC) के रूप में की थी।

गठन की शुरुआत :

- 20 सितंबर 2006 को न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा सत्र के दौरान रूस के प्रधानमंत्री व्लादिमीर पुतिन की पहल पर पहली BRICS मंत्रीस्तरीय बैठक आयोजित की गई, जिसमें रूस, चीन और ब्राजील के विदेश मंत्री सहित भारतीय रक्षा मंत्री ने भाग लिया।
- 16 मई 2008 को रूस के "येकातेरिनबर्ग" में ब्रिक्स विदेश मंत्रियों की एक बैठक की गई, जिसमें सामयिक वैश्विक विकास पर आम सहमति के साथ एक संयुक्त विज्ञप्ति जारी की गई।
- 9 जुलाई 2009 को रूस के तत्कालीन राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव ने टोयाको (जापान)में G–8 शिखर सम्मेलन के दौरान ब्राजील के तत्कालीन राष्ट्रपति लुइस इनासियो लूला दा सिल्वा, भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह एवं चीनी राष्ट्रपति हू जिताओ के साथ बैठक में BRIC के औपचारिक गठन का ऐलान किया गया।
- वर्ष 2010 में इस अंतर–सरकारी संगठन में दक्षिण अफ्रीका के शामिल होने के बाद इस संगठन का नाम BRIC से BRICS कर दिया गया।
- BRICS में B का तात्पर्य ब्राज़ील से, R से रूस, I से इंडिया, C से चाइना और S से दक्षिण अफ्रीका से है।

BRICS का वैश्विक महत्व :

- BRICS के सदस्य देश संयुक्त रूप से दुनिया की कुल आबादी का 45% (लगभग 3.5 अरब) का प्रतिनिधित्व करता है।
- विश्व बैंक के आंकड़े के अनुसार BRICS के सदस्य देश संयुक्त रूप से कुल वैश्विक अर्थव्यवस्था के 28% (लगभग 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर) रखता है।
- BRICS के सदस्य देश संयुक्त रूप से विश्व का लगभग 44% कच्चे तेल का उत्पादन करता है।
- BRICS के सदस्य देश संयुक्त रूप से विश्व के कुल वैश्विक व्यापार का 16% का प्रतिनिधित्व करता है।

BRICS के नए सदस्य देश :

- 1 जनवरी 2024 को पांच मूल सदस्य देशों के साथ मिस्त्र, इथोपिया, ईरान और संयुक्त अरब अमीरात को इस संगठन में नए सदस्य के रूप में शामिल किया गया है।

चीन की मंशा BRICS पश्चिमी विरोधी समूह बने :

Result Mitra

- हालांकि BRICS के सभी फैसले सर्वसम्मति से सभी सदस्य देशों के साथ किए जाते हैं लेकिन रूस खुद को पश्चिमी देश का प्रतिद्वंद्वी मानता है तथा चीन–अमेरिका का संबंध वर्तमान में ऐतिहासिक रूप से अपने निचले स्तर पर है।
- ऐसे में BRICS का हालिया विस्तार चीन और रूस की पश्चिमी देशों के साथ प्रतिद्वंद्विता को दर्शाता है।
- ईरान जैसे अमेरिका विरोधी देश का BRICS का सदस्य बनाए जाना चीन और रूस की पश्चिम विरोधी प्रतिद्वंद्विता को दर्शाता है।
- हालांकि रूस और चीन के अलावे BRICS के सदस्य देश भारत, संयुक्त अरब अमीरात, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका के पश्चिमी देशों से अच्छे संबंध है।
- ऐसे में अनिवार्य रूप से BRICS की परिकल्पना गैर–पश्चिमी देशों के समूह के रूप में की गई है, जो वैश्विक उत्तर के प्रभुत्व वाले विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाओं के प्रतिकार के रूप में कार्य कर सकता है।

BRICS शिखर सम्मेलन–2024 का महत्व :

- इसी वर्ष जुलाई में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मुलाकात के बाद पीएम मोदी इस शिखर सम्मेलन के दौरान फिर से रूसी राष्ट्रपति से मुलाकात करेंगे।
- चूंकि रूस वर्तमान में रूस–यूक्रेन संघर्ष के कारण पश्चिमी देशों के दबाव का सामना कर रहा है, ऐसे में भारतीय प्रधानमंत्री और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर के बीच मुलाकात इस बात को रेखांकित करने के लिए महत्वपूर्ण होगा कि नई दिल्ली पारंपरिक रूप से मजबूत भारत–रूस संबंध को कितना महत्व देती है।
- रूसी राष्ट्रपति का BRICS शिखर सम्मेलन के दौरान विश्व के महत्वपूर्ण नेताओं के साथ मुलाकात पश्चिमी देशों के लिए एक संदेश के रूप में काम करेगा कि रूस–यूक्रेन युद्ध के बीच मास्को को वैश्विक दृष्टि से शेष दुनिया से अलग-अलग करने की कोशिश सफल नहीं हो पाई है।
- चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के अलावे इस वर्ष पहली बार ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेसकियान भी पूर्ण सदस्य के रूप में इस शिखर सम्मेलन में भाग ले रहे हैं।
- ईरान वर्तमान में चल रहे पश्चिम एशिया में विनाशकारी संघर्ष का प्रमुख खिलाड़ी है।
- इन सबके अलावा भारत इस शिखर सम्मेलन में अपनी बहुपक्षवाद की नीति के अनुरूप वैश्विक दक्षिण (Global South) को मजबूत आवाज देने की कोशिश करेगा।

BRICS का भारत के लिए महत्व :

- भारत ब्रिक्स के भीतर घनिष्ठ सहयोग को महत्व देता है, जो वैश्विक विकास एजेंडा, सुधारित बहुपक्षवाद, जलवायु परिवर्तन, आर्थिक सहयोग, लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं के निर्माण, सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के जुड़ाव को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करता है।

भू–राजनीति महत्व :

- अमेरिका, रूस और चीन के बीच टकराव के बीच भारत इस मंच का उपयोग अपने रणनीतिक हितों को साधने में करता है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था :

- भारत BRICS के सदस्य देशों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय वित्तीय और मौद्रिक प्रणाली को सुधार करने के लिए महत्वपूर्ण काम कर रहा है।

विकासशील देशों की आवाज :

- भारत लगातार BRICS के मंच से विश्व व्यापार संगठन से लेकर जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर वैश्विक दक्षिण (Global South)की आवाज को मजबूत करने का प्रयास कर रहा है।
- हाल के समय में भारत विकासशील देशों की ओर से BRICS के मंच से वैश्विक खाद्य आपूर्ति, आतंकवाद के विरुद्ध कड़ा रुख अपनाने के लिए काम कर रहा है।

वैश्विक समूहीकरण :

- भारत लगातार BRICS के मंच से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) और परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG) में अपनी सदस्यता बहाल करने के प्रयास के रूप में काम कर रहा है।

Result Mitra TM